महामति कहे ऐ मोमिनों, ए तलाब करो याद ।
फेर कहों उदयपुर की, जो बीतक बुनियाद ॥९९॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! उदयपुर के ताल की इस बीतक को हमेशा याद रखना । फिर वहां से उदयपुर में आये । अब उस बीतक को सुनो ।

(प्रकरण ४९, चौपाई २६२७)

उदयपुर

फेर उहां से आये उदयपुर, उतरे हवेली में ।
साथ सब आये मिल्या, सुख पाया मिलाप से ॥१॥

फिर ताल से आप स्वामी जी सब सुन्दर साथ को लेकर उदयपुर आकर एक हवेली में ठहरे । स्थान-स्थान से सुन्दर साथ आकर श्री जी से मिले तथा दर्शन करके अति प्रसन्न हुए ।

इन समें गोवरधन भट्ट, सूरत से आया ।
धोली बाई साथ थी, तिन को संग ल्याया ॥२॥

इस समय सूरत से गोवर्धन दास आये । उनकी धर्मपत्नी धोली बाई साथ में थी । वे भी श्री जी के दर्शनों के लिए आई थी ।

ए दोऊ आए कदमों लगे, साथ सों किया मिलाप ।
बातें सुनी इत उत की, लगे चर्चा करनें आप ॥३॥

दोनों ने आकर श्री जी के चरणों में प्रणाम किया । दोनों स्थानों के सुन्दरसाथ की चर्चा हुई । तब श्री जी ने वाणी चर्चा आरम्भ की ।

इन समें पातसाह ने, करी मुहींम राणे पर ।
आये अजमेर से भेजिया, मथुरिया इन पर ॥४॥

इस समय औरंगजेब बादशाह का उदयपुर के राणा पर चढ़ाई करने का समाचार आया । उसने अजमेर से अपने दूत मथुरिया को भेज कर यह संदेश कहलाया ।

आओ मेरे दीन में, ल्याओ तुम ईमान ।
पांच परगने देऊं तुमें, जो होवे मुसलमान ॥५॥

तुम मेरे दीने इसलाम में ईमान ले आओ । यदि मुसलमान हो जाओगे तो तुम्हें पाँच परगने भेंट में दिये जायेंगे ।

Nijanand App

गरीब दास पुरोहित को, आग्या करी तिन ।
सो ले गया राजसिंह पे, कही कानों लाग कानन ॥६॥

मथुरिया ने गरीब दास पुरोहित को हुकम देकर बादशाह का सन्देश राणा को पहुंचाया । पुरोहित ने राणा राजसिंह के पास आकर गुप्त रूप से कानों में कहा ।

सुनते ही रीस करी, तुझे ना छोड़ता मैं ।
पर क्या करों पुरोहित भया, अब भाग जा इत से ॥७॥

यह धमकी सुन कर राणा क्रोध से भड़क उठा और कहा कि यदि तुम पुरोहित नही होते तो मैं जीवित नही छोड़ता । अब यहां से तुम भाग जाओ ।

देओ धक्के इन दूत को, जो ऐसी बात सुनावे कान ।
दलगीर हुआ दिल में, मन में बड़ा गुमान ॥८॥

फिर उसने आदेश दिया कि मुसलमान हो जाने का संदेश देने वाले दूत को धक्के मारकर भगा दो। वह मन में बड़ा दुखी हुआ क्योंकि उसको औरंगजेब का दूत होने का बड़ा गुमान था और उसे इस बात का निश्चय था कि राणा मेरे कहने से मुसलमान हो जाएगा ।

ओ तो दूत फिर गया, इत खड़ भड़ पड़ी जोर ।
इन समें दज्जाल नें, किया जो बड़ा सोर ॥९॥

संदेश लाने वाला मथुरिया तो लौट गया लेकिन राणा के राज्य में बादशाह की चढ़ाई के भय से भगदड़ मच गई । दज्जाल के रूप में राणा के पण्डितों को स्वामी जी का विरोध करने का फिर अवसर मिल गया। उन्होंने राणा को बहका कर श्री जी को उदयपुर से बाहर भेजने की प्रार्थना की ।

तब श्री जी साहिब जी कहलाइया, हम रदबदल करें इत ।
दौर नजीक पहुंचिया, बखत रोज कयामत ॥१०॥

तब राणा को श्री जी ने संदेश भेजा कि आप चिन्ता न करो । बादशाह कोआने दो । हम उससे वार्ता करके निपट लेंगे । क्यामत के जाहिर होने और आत्मा की जागनी का समय अब नजदीक आ गया है।

तुम कछू ना बोलियो, रद बदल करें हम ।
इन राह से दीन की, ए आवें तले हुकम ॥११॥

हे राणा ! तुम कुछ भी मत कहना । हम बादशाह से स्वयं चर्चा करेंगे । हमसे ईमाम मेंहदी के आने तथा कयामत के निशानों के जाहिर होने की बात सुनकर झुक जाएगा तथा मेरे हुकम को खुदाई हुकम मानकर अमल करेगा ।

Nijanand App

ए बात राणें सुनी, हम ऐसे नही पात्र ।
जो रदबदल करें दीन की, ऐसे नहीं हमारे गात्र ॥१२॥

श्री जी के भिजवाए हुए संदेश को सुनकर राणा ने कहा कि हम इस योग्य नही है कि मुसलमानों से दीने इस्लाम की चर्चा कर सकें और औरंगजेब की बराबरी करने की भी शक्ति हमारे पास नही है।

हम से बोझ पातसाहों का, क्यों कर उठाया जाए ।
हम सुनत बात डरत हैं, ए हमसे न होए उपाए ॥१३॥

मेरा छोटा सा राज्य है । औरंगजेब बादशाह की सेना के खर्चे का बोझ हम किसी प्रकार भी उठा नही पायेंगे । हम तो कुरान की बात को सुन कर ही घबराते हैं तो मुसलमानों के सामने कुरान से वार्ता करने का कोई भी हमारे पास उपाय नही है ।

तब हजूर दज्जाल था, सो निंदा करने लगा जोर ।
हम आगे ही तुझ से कही, वे करने लगे सोर ॥१४॥

राणा के दरबार में वे ही पण्डित लोग बैठे थे । मौका पाकर उन्होंने फिर कहा कि हमने आपको पहले ही कह दिया था कि इस साधू को यहां रखना ठीक नही हैं । इस प्रकार राणा से बुराई करने लगे ।

निकाल छोड़ो इन को, कोई कहे लूट लेओ तुम ।
सब राणा सुनत है, पर कछू न किया हुकम ॥१५॥

किसी ने राणा से कहा कि इन वैरागियों को राज्य से बाहर निकाल दो । दूसरे ने कहा कि इन्हें लूट लो । राणा सबकी बातें सुनता रहा पर कोई भी अनुचित हुकम नही दिया ।

राणा भीमसेन पासे था, इन सुनी बातें कान ।
इन ठौर वैरागी लूट लेओगे, तो हम होवें बदनाम ॥१६॥

भीमसेन जो राणा का वजीर था, पास बैठे होने के कारण से उसने सारी बातों को सुन कर कहा कि यदि हम वैरागियों को लूट लेंगे तो हमारी बहुत बदनामी होगी ।

भेज दिया कोतवाल को, तुम बिदा होओ चार दिन ।
सब सुख समाधान होवहीं, फेर आइयो साधुजन ॥१७॥

राणा ने कोतवाल को भेज कर श्री जी से प्रार्थना की कि हे साधु जन ! दो चार दिन के लिए आप और किसी स्थान पर चले जाइए । तनिक सुख शान्ति होने पर लौट आना ।

Nijanand App

लसकर चारों तरफों, दज्जालें फैलाया चोफेर ।
पावे न कोई निकसनें, बड़ा जो किया सोर ॥१८॥

इसी समय दज्जाल स्वरूप बादशाह की सेना ने उदयपुर को चारों तरफ से घेर लिया । घेराव हो जाने के कारण कोई भी नगर से बाहर नहीं जा सकता था । इसलिए उदयपुर शहर में हाहाकार मच गया ।

श्री जी साहिब जी ने बिचारिया, हुआ हमको हुकम ।
ए आज्ञा है राज की, इहां से उठो तुम ॥१९॥

श्री जी साहिब ने विचार किया कि यहां से जाने के लिए यह आज्ञा श्री राज जी की ही है । यह मान कर हमें किसी अन्य स्थान पर चले जाना चाहिए ।

ऐह सामा सूत हम संग, निबहे नहीं लगार ।
इतही बांट दीजिये, ऐसा किया विचार ॥२०॥

कई प्रकार की अन्य अनावश्यक चीजें इकट्ठी हो गई थी । किसी हालत में भी हम इनको उठा कर अपने साथ नही ले जा सकते । इसलिये श्री जी ने ऐसे सब सामानों को बांट देने का विचार किया ।

फेर कोतवाल आइया, ल्याया हुकम दूसरी बेर ।
रानें रजा दई तुमको, यों कर कहूया फेर ॥२१॥

राणा का आदेश पाकर कोतवाल दूसरी बार आया और कहने लगा कि राणा ने विनय पूर्वक आपसे दुबारा कहलवाया है कि आप किसी और स्थान पर चले जाएं ।

अब इत रहने का, धरम न रहूया लगार ।
हमारा जो अखत्यार, है हाथ परवरदिगार ॥२२॥

तब श्री जी ने विचार किया कि अब यहां रहना हमारा धर्म नही है । हमें रखने या ले जाने का सब अधिकार श्रीराजजी महाराज के हाथ में है ।

एही हमको काढ़त, छुड़ाए दियो ए ठौर ।
जहां खेंचे तहां जायेंगे, अब ढूंढों ठौर और ॥२३॥

वह धाम के धनी श्री राज जी महाराज ही हमको यहां से निकाल कर हमसे यह स्थान छुड़ा रहे हैं। अब वे जहां भी हमको ले जाना चाहते होंगे । हम ढूढं कर उसी जगह चले जायेंगे ।

इन समें महा सिंह, करने आया दीदार ।
पहिनाया सिरोपाव इनको, अब तुम हूजो खबरदार ॥२४॥

ऐसे में महासिंह श्री जी के दर्शन करने आया । श्री जी ने उसको सम्मानित करके पूरी पोशाक प्रसाद के रूप में दे दी और कहा कि अब तुम सावचेत होकर रहना । माया में लिप्त न हो जाना ।

Nijanand App

हम तो बिदा होत हैं, तुमारे मुलक से ।
तुम बैठ ना सकोगे, बैरान होओ इनमें ॥२५॥

हम तो आपके देश से जा रहे हैं । तुम लोग भी इस राज्य में शान्ति से नहीं रह सकोगे । यह सारा राज्य वीरान हो जायेगा ।

और जेते उमराउ, और जेते पासवान ।
और साथ आपना, जाको थी पहिचान ॥२६॥

जितने भी उदयपुर के मंत्रीगण और राजदरबार में सेवा करने वाले तथा अपने साथी जिन्हें श्री जी के स्वरूप की पहचान थी ।

तिन सबों को सिरोपाव, घरों दिए पोहोंचाए ।
निरगुन भेख पेहेरन का, मोमिनों दिया बताए ॥२७॥

उन सबको सम्मानित करते हुए सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों की पूरी पोशाक परशादी के रूप में दी । जो वहां उपस्थित नही थे, उनके घरों में अन्य सामग्री पहुंचा दी । अपने साथ चलने वाले सुन्दरसाथ को निर्गुण भेष लेने को कह दिया ।

पहने चीरक बस्तर, सब सरगुन दिया डार ।
हुए चलने को तैयार, छोड़ा कार वेहेवार ॥२८॥

सब सुन्दरसाथ ने कीमती वस्त्र एवं बहुमूल्य आभूषणों को त्यागकर फकीरी भेष धारण किया और चर्चा वाणी से जागनी का कार्य यहां बंद कर दिया ।

बासन बस्तर सरगुन, बख्स दिया सबन ।
तूंबा कूबड़ी गोदड़ी, ए भेख पहना मोमिन ॥२९॥

सब कीमती और अनावश्यक सामान उदयपुर में ही बांट दिया । तूंबा, कूबड़ी और गुदड़ी धारण करके साथियों ने भी निर्गुण भेष ले लिया ।

अब कहूं साथ उदयपुर का, जिन सौंपी आतम ।
आए दीन इसलाम में, सिर चढ़ाया हुकम ॥३०॥

अब उदयपुर के जाग्रत हुए सुन्दरसाथ के नाम कहता हूं । जो श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की पहचान करके समर्पित हुए थे । सुन्दर-साथ में शामिल होकर उन्होंने श्री जी की आज्ञा को शिरोधार्य किया ।

Nijanand App

एक तो लाधू मसानी, और अमरा जी नाम ।
और आया देवजी, हर सुन्दर आया इसलाम ॥३१॥

एक तो उनमें लाधू मसानी, अमरा जी, देव जी, हरसुन्दर आदि श्री निजानन्द सम्प्रदाय में आए ।

और भाई मंगलजी, और आया गिरधर ।
गेहेला मना हिम्मत, ए आये मुहब्बत पर ॥३२॥

मंगलजी भाई, गिरधर भाई, गेहेला भाई, मन्ना भाई तथा हिम्मत भाई श्री प्राणनाथ जी के प्रति अटूट प्रेम लेकर सुन्दरसाथ में मिले ।

आए केसवदास बेनीदास, और आए सोभा भीमा ।
और भोगी बीर जी आये, इनों भास्या सुख जमा ॥३३॥

केशवदास, बेनीदास, शोभा, भीमा, भोगी और वीर जी भाई आदि ने ये समझ लिया कि श्री जी के चरणों में ही सुख का खजाना है इसलिए वे श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए ।

और आये प्रेमदास जगन्नाथ, और पीछे आए लखमीदास ।
और सोनी नारायण, ले धाम धनी की आस ॥३४॥

प्रेमदास, जगन्नाथ, लक्ष्मीदास और नारायणदास, सोनी आदि माया को छोड़कर धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के चरणों की ही आशा लेकर आए ।

और साथ समस्त में, एक भाई वासुदेव ।
इनकी माता सहुद्रा, पलेवास में पाया भेव ॥३५॥

समस्त सुन्दरसाथ में वसुदेव भाई तथा इनकी माता सहुद्रा पलेवास गांव में श्री जी के स्वरूप की पहचान कर चरणों में समर्पित हुई ।

मोटी बाई कुंजा बाई, कमला बाई नाम ।
और खुसाली कही, ए आए इस ठाम ॥३६॥

मोटी बाई, कुंजी बाई, कमला बाई, खुशहाली बाई भी उदयपुर में चर्चा सुनकर श्री जी के चरणों में समर्पित हुई ।

और आई लाल बाई, और आई नागर ।
और भूरो भतू, तजी माया राज खातर ॥३७॥

लाल बाई, नागर बाई, भूरो बाई, भत्तू बाई ने झूठी माया का अपने धाम के धनी श्री राज जी के लिए त्याग कर दिया ।

Nijanand App

केसर और भानाबाई, और गंगाबाई गंगी ।
और आई लाड़बाई, ल्याई दीन में अपने संगी ॥३८॥

केसरबाई, भानाबाई, गंगा बाई, गंगीबाई और लाड बाई अपनी सब संगी-सहेलियों के साथ श्री जी को पहचान कर के श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुई ।

कृष्णा बाई लाल बाई, और सोना फूला नाम ।
जीवी और देवबाई, ए दाखिल इसलाम ॥३९॥

कृष्णा बाई, लाल बाई, सोना बाई, फूला बाई, जीवी बाई और देवबाई ने श्री जी से तारतम ज्ञान पाकर निजानन्द सम्प्रदाय में प्रवेश किया ।

सहू और गंगाबाई, और जगू बाई तारू ।
बछू बाई फूलबाई, किया राजें उपरारू ॥४०॥

सहू बाई, गंगा बाई, जगू बाई, तारू बाई, बछू बाई और फूलबाई सुन्दरसाथ में शामिल हुईं और श्री जी ने उन्हें माया से विरक्त कर दिया ।

भोगन और मथुरी, आई गोरी और मनू ।
पीठ दई दुनियां को, नीके जानो सुपनू ॥४१॥

भोगन बाई, मथुरी बाई, मनू बाई, गोरी बाई आदि ने संसार को सपना जाना और श्री जी के चरणों में समर्पित हुई ।

अमेखी और दानी खेती, और मनी बेरानी नाम ।
नानी बाई गोमा बाई, ए पीछे आई इसलाम ॥४२॥

अमेखी बाई, दानी बाई, खेती बाई, मनी बाई, बेरानी बाई, नानी बाई और गोमा बाई बाद में श्री निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हुई ।

गोमा और वीर बाई, और नाथी लखी ।
भाग बाई तारा बाई, खेली ब्रज रास में सखी ॥४३॥

गोमा बाई, वीर बाई, नाथी बाई, लखी बाई, भाग बाई, तारा बाई ने रास लीला खेली थी । यह जान कर सुन्दर साथ में शामिल हुई ।

Nijanand App

अनदू और मनी बाई, पूर बाई और गंग ।
भाना बाई अमृत बाई, सुख पावे राज के संग ॥४४॥

अनदू बाई, मनी बाई, पूर बाई, गंग बाई, भाना बाई और अमृत बाई सर्वस्व त्याग कर आईं । इन्होंने श्री जी के सत्संग में अंखड सुख प्राप्त किया ।

अमृत दे करमा बाई, और चीमा सहोदरी ।
और कान बाई मना दे, मेहर राज की उतरी ॥४५॥

अमृत दे, करमा बाई, चीमा बाई, सहोदरी बाई, कान बाई और मना दे श्री राजजी महाराज की कृपा से श्री जी के चरणों में समर्पित हुई ।

चीमा बाई सजनी, और दीपा बाई नाम ।
और साथ समस्त सब, उदेयपुर के ठाम ॥४६॥

चीमा बाई, सजनी बाई, दीपा बाई और अनेक सुन्दरसाथ उदयपुर शहर में जाग्रत होकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हुए ।

यामें कोई आगे कोई पीछे, आए बीच इसलाम ।
कोई तो समझन के पख, कोई दीदार के विश्राम ॥४७॥

इनमें कोई पहले, कोई बीच में और कोई बाद में श्री निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हुए । इनमें कुछ आत्म तत्व के ज्ञान को समझने के लिए आए और कुछ श्री जी के दर्शनों से आतम शान्ति पाने के लिए चरणों में आये ।

जब सुलतान चढ़ा राणे पर, तब भागा सारा देस ।
तब उहां से निकलने पड़ा, जुदे पड़े दरवेस ॥४८॥

जब औरंगजेब की सेना ने उदयपुर पर चढ़ाई की तो सारे राज्य के लोग अपनी सुरक्षा के लिए इधर उधर भाग गए । तब उदयपुर राज्य से साधु फकीरों का निकलना भी आवश्यक हो गया । श्री जी अपने सुन्दरसाथ को भी वहां से लेकर चल पड़े ।

उहां सेती चल के, आए रामपुर के गाम ।
पासे पुरा दुधलाई, पूरनदास के ठाम ॥४९॥

उदयपुर से चल कर श्री प्राणनाथ जी अपने साथियों सहित रामपुर आये । वहीं पास में दुधलाई गांव में पूरन दास के घर डेरा लगाया ।

Nijanand App

महामत कहें ऐ मोमनों, ए उदेयपुर की बीतक ।
अब कहों मन्दसोर की, जो बीतक हुकम हक ॥५०॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! उदयपुर की बीतक आपको सुनाई है । अब श्री राजजी के हुकम से मंदसौर में जो कुछ बीतक हुई उसका वर्णन करेंगे ।

(प्रकरण ५०, चौपाई २६७७)

मन्दसोर की बीतक

अब कहों मन्दसोर की, आये उदेयपुर से चल ।
जब नौरंग चढ़ा राने पर, हुआ मुलक चल विचल ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि मैं अब मंदसौर की बीतक कहता हूं । जब उदयपुर से चले तो औरंगजेब की सेना ने राणा के राज्य उदयपुर पर चढ़ाई कर दी तो वहां उथल-पुथल मच गई।

सम्बत् सत्रह सै छत्तीसा, लगा सैंतीसा जब ।
मन्दसोर के बीच में, आए पोहोंचे तब ॥२॥

सम्वत् १७३६ (सन् १६७९ ई०) समाप्त हुआ तथा १७३७ (१६८०) आरम्भ हुआ था कि मंदसोर में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी पहुंचे ।

इन समें फकीरी का, भेख धरा अनूप ।
सोभा छब सरूप की, वारों कोटक रूप ॥३॥

इस समय श्री जी ने फकीरी का एक अनुपम भेष धारण कर रखा था । इनके सुन्दर विराजमान सरूप की अनुपम शोभा पर करोड़ों सुन्दर रूप न्योछावर कर दूं ।

गोटा सोभे सिर पर, ऊपर कनढपी ।
दोए पुरत लोइ धागे भरी, ए पेहेनत हैं टोपी ॥४॥

श्री प्राणनाथ जी के सिर पर किनारी लगी टोपी शोभायमान है । उसके ऊपर कनढप्पी पहनी है । धागों से भरी दोहरी ऊनी चादर ओढ़े हैं ।

अति सुन्दर तिलक बन्यो, दोए रेखा बीच बिन्द ।
गोपी चन्दन सुपेत का, मुख सोभित मानों चन्द ॥५॥

उनके सुन्दर मस्तक पर दो रेखाओं के बीच गोपी चन्दन का सुन्दर तिलक लगा है । श्री जी का मुख मंडल चन्द्रमा के सामान सुशोभित है ।

Nijanand App